सम्पादकीय

गुरु अर्जुनदेव जी का पुण्य स्मरण

मध्यकालीन भारतीय दश गुरु परम्परा के पंचम गुरु श्री अर्जुनदेव जी को जहांगीर ने शहीद करवा दिया था। उनको अत्यन्त अमानुषिक यातनाएं दी गई परन्तु वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहे। जहांगीर जो उस समय भारत की सत्ता पर काबिज थे, श्री अर्जुनदेव जी का मतान्तरण करवाना चाहता था। उसका कहना था कि श्री गुरु अर्जुनदेव जी अपना पंथ छोड़कर इस्लाम के पंथ में दीक्षित हो जाये परन्तु गुरु जी नहीं माने। गुरुजी जिस मार्ग पर चल रहे थे वह धर्म का मार्ग था। जिन मान्यताओं में गुरुजी की आस्था थी उनको भय अथवा लालच से कैसे छोड़ा जा सकता था? फिर भय चाहे साक्षात यमराज का ही क्यों न हो? गुरुजी ने मृत्यु का आलिंगन कर लिया परन्तु अपने रास्ते से नहीं डमगमाये। जहांगीर ने अपनी आत्म कथा 'तुज्के जहांगीरी' में अपने मकसद का स्पष्ट उल्लेख भी किया है कि एक हिन्दु साधु लम्बे अर्से से ब्यास नदी के किनारे पर अपना डेरा चला रहा है। जहांगीर को दुख है कि कुछ मुसलमान भी इस साधु के मुरीद बन गये हैं। जहांगीर जब इन मुसलमानों की बात करता है तो जाहिर है कि ये मध्य ऐशिया या अरब या फिर ईरान के मुसलमानों तो नहीं होंगे। वह उन्हीं मुसलमानों की बात कर रहा है जो कुछ दशक पहले भय अथवा लालच के कारण कोई भारतीय पंथ छोड़कर इस्लाम पंथ में दीक्षित हो गए होंगे। ब्यास नदी के किनारे जब श्री गुरु अर्जुनदेव जी ने ज्ञान का प्रकाश किया और लोगों को भय मुक्त होना सिखया तो हो सकता है कि इस प्रकार के मतान्तरित मुसलमान श्री गुरुजी की शरण में आकर अपनी मूल मान्यताओं से फिर जुड़ने लगे हों। जहांगीर को इस प्रक्रिया से सच मुच कष्ट पहुंचा रहा था।

बहुत से इतिहासकार यह स्थापित करने का प्रयास करते रहते है कि विदेशों से जिन मुसलमानों ने भारत में आकर आक्रमण किया और यहां की सत्ता पर कब्जा जमाया, वे सभी राजा धीरे-धीरे इसी भूमि से जुड़ गये और उनका भारतीय करण हो गया इसलिए उनका शुमार भी भारतीय राजाओं में ही होना चाहिए। बहुत से मुसलमान हमलावर तो भारत में आक्रमण करने के लिए आते रहे और लूटपाट करके वापिस अपने देशों को जाते रहे। लेकिन बाद में कुछ हमलावरों ने वापिस जाने की बजाये यहीं पर स्थायी शासन स्थापित किया। यह इतिहासकार बाबर और उसके परवर्ती वंशजों को लेकर बहुत ज्यादा उत्साह में रहते हैं और उन्हें भारत पर काबिज राजा नहीं, बल्कि शुद्ध भारतीय राजा कहे जाने की वकालत करते हैं। जहां तक बाबर का प्रश्न है, उसने तो अपनी वसीयत में ही लिख दिया था कि उसे भारत में कहीं नहीं दफनाया जाये। बल्कि उसकी कब्र अफगानिस्तान में बनाई जाये। उसकी इच्छा के अनुसार उसकी कब्र अफगानिस्तान में ही बनाई गई और पिछले दिनों हमारे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह उस कब्र पर जाकर अकीदा भी पढ़ आये हैं। हुमायूं पराजित होकर शरण लेने के लिए भारत में किसी कोने की तलाश नहीं कर रहा था बल्कि वह भी अफगानिस्तान की और ही भाग रहा था। अकबर को लेकर हमारे कई इतिहासकार आंखों में आंसू भरने लगते हैं। वे महाराणा प्रताप को विद्रोही और रजवाड़ा बताते हैं लेकिन अकबर के नाम के आगे स्वप्न में भी महान लगाना नहीं भूलते। कहा जाता है कि अकबर का तो शत-प्रतिशत भारतीयकरण हो गया था। लेकिन अकबर जो काम मुल्ला मौलवी नहीं कर पा रहे थे, दीने इलाही के माध्यम से कर देना चाहता था। शेष मुगल सम्राट जो काम तलवार के जोर से कर रहे थे अकबर वहीं काम भारत में बहला फुसला कर करना चाह रहा था। ये राजा भारत की मिट्टी में खपे नही थे बल्कि अपने अपने तरीके से भारत को इस्लामस्तान बनाना चाहते थे। जहांगीर उसी परम्परा का पालन कर रहा था और इसी मकसद के लिए उसने श्री अर्जुन देव जी को मरवाया था। जहांगीर की इसी परम्परा को औरंगजेब ने और ज्यादा अत्याचारों से आगे बढ़ाया। श्री अर्जुनदेव जी की शहादत जहांगीर द्वारा गुस्से में या प्रतिक्रिया से वशीभूत होकर किया गया कृत्य नहीं था बल्कि एक लम्बी विदेशी रणनीति का हिस्सा था। भारत माता इस बात की ऋणी रहेगी की गुरु श्री अर्जुनदेव जी ने अपनी शहादत से इस नीति को रोका ही नहीं बल्कि धर्म पर बलिदान हो जाने वालों के लिए एक नया रास्ता भी खोला दिया। ● - **डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री**